## पद ६३ (राग: झिंजोटी - ताल: धुमाळी) चला जाऊं पाहू भीम चाळकापुरिचा।।ध्रु.।। सव्य कर उभा केला।

पदक-माळ शोभे गळा। भालीं कस्तुरिचा टिळा। नेसे पितांबर

फिवळा। कांठ जरीचा।।२।। अनाथाचें विघ्न वारी। आत्मारामा

साह्यकारी। माणिकाचा पूर्ण करी। हेतु अंतरीचा।।३।।

पुच्छ वरुनि मुरडिला। डावा कर कटीं ठेविला। मुख उत्तरेचा।।१।।